कक्षा के बाहर सक्षम अधिगम

श्रीपर्णा तम्हाणे

"बच्चा कोई फूलदान नहीं जिसे भर दिया जाए वरन वह तो ऐसी आग है जिसे प्रज्ज्वलित करने की आवश्यता है।" – यह विचार था फ्रेंच पुनर्जागरण विद्वान और लेखक फ्रेंकोइस रबेलेस का। तभी से कई सदियों के अनेक श्रेष्ठ शिक्षाविदों ने यह बात मानी है कि शिक्षा का सही उद्देश्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति हर सम्भव तरीके से पुष्पित हो। तो फिर हम "फूलदान को भरने" में इतना अधिक ध्यान क्यों देते हैं जबकि "प्रज्ज्वलित करने" वाली बात कहीं नजर ही नहीं आती। हमने शिक्षा को केवल जानकारियों का हस्तान्तरण क्यों बनाकर रख दिया है जहाँ व्यक्ति के जीवन का सारा ध्यान सिर्फ परीक्षा के प्रदर्शन पर केन्द्रित किया जाता है?

जैसे एक पौधे को बढ़ने के लिए सही मिट्टी की जरूरत होती है, ठीक वैसे ही बच्चे को खिलने के लिए सही वातावरण की जरूरत होती है। कक्षा हो या घर, बच्चे के लिए सही वातावरण वह होता है जहाँ उसे साँस लेने, खुद को खोजने, आत्मविश्वास हासिल करने एवं अपनी क्षमता को जानने का अवसर मिले। फिर भी हममें से कितने लोग हैं जो ईमानदारी के साथ स्कूल के वातावरण को इस बात का सच्चा श्रेय दे सकते हैं कि उसने हमें आत्मविश्वास, सहानुभूति, स्वतन्त्र रूप से सोचने की क्षमता तथा विवेकपूर्ण चयन जैसी बातों से लैस किया है न कि हममें अपर्याप्तता, विभ्रम, भय तथा असुरक्षा की भावना भर दी है जिसके चलते हम चाहे और कुछ भी बने हों, लेकिन जीवन का सामना कर सकने योग्य, आत्मविश्वासी एवं पूर्ण विकसित वयस्क तो निश्चित रूप से नहीं बने हैं?

हमने कक्षा के वातावरण एवं कक्षा के बाहर अन्त:क्रिया के स्थान–दोनों को नजरअन्दाज किया है तथा बच्चे के व्यक्तित्व को आकार देने में इनके प्रभाव को निहायत कम करके आंका है।

बच्चे के माता–पिता और उनकी देखभाल करने वाले उसके साथ जैसा व्यवहार करते हैं, उसका असर उसकी वृद्धि व विकास पर पड़ता है। प्यार और समर्थन से भरा वातावरण, स्वीकरण एवं प्रशंसा की चिन्ता किए बिना, बच्चों के विकास व स्वाभाविक रूप से सीखने में मदद करता है। इसलिए बच्चे का भावनात्मक वातावरण भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना कि भौतिक वातावरण। जिस देश को भौतिक वातावरण के लिए अकसर संघर्ष करना पड़ता हो, वहाँ भावनात्मक वातावरण की बात करना दूर की कौड़ी लाने जैसा है। वैसे एक पोषक वातावरण के लिए किसी विशेष बुनियादी ढाँचे की जरूरत नहीं होती, सिवाय बच्चों के साथ काम करने वालों के स्नेह, समझ एवं संवेदनशीलता के।

बच्चे को कक्षा में ही ऐसे लोकतान्त्रिक ढाँचे से परिचित कराया जा सकता है जिसमें हर एक का सम्मान हो और जहाँ सभी बच्चों को एक भय रहित व हर्षपूर्ण वातावरण में अपनी ही गति से सीखने का अवसर दिया जाए। जब बच्चे खुश और मुक्त होते हैं, तब सबसे अच्छी तरह सीखते हैं। यह स्वतन्त्रता मनमानी करने के लिए नहीं बल्कि खोजने, व्याख्या करने और व्यक्त करने के लिए होनी चाहिए। यदि बच्चे को सीखने के पर्याप्त अवसर न दिए जाएँ तो हम यह अपेक्षा नहीं कर सकते कि वह विकसित हो पाएगा, खास करके संज्ञानात्मकता के क्षेत्र में। नाटक, संगीत, नृत्य, चित्रकला व क्राफ्ट, मुक्त खेल आदि ऐसे प्रभावी तरीके हैं जिनके माध्यम से विविध अनुभव प्रदान करने से बच्चे को विकसित होने के प्रचुर अवसर प्राप्त होते हैं। बच्चों के भावनात्मक संसार के साथ सामंजस्यता बिठाना भी महत्त्वपूर्ण है। बच्चों के साथ बातचीत करने, टहलने, सहयोगात्मक गतिविधियाँ करने या खेलने के माध्यम से हम उनके साथ गुणावत्तापूर्ण समय बिता सकते

हैं। मुझे एक सरल सी प्रक्रिया याद आ रही है जिसने कक्षा के भीतर हमारे पारस्परिक सम्बन्धों को बेहतर बना दिया था। इसमें हम सब एक गोले में बैठकर कुछ बातें साझा करते थे और हमने इस गतिविधि को "मैड, सैड एण्ड ग्लैड" का नाम दिया। जैसा कि नाम से ही जाहिर है, हम सबको यानि विद्यार्थियों व शिक्षक को ऐसी बातें साझा करनी होती थीं जिन्हें लेकर हम पागल से हैं, दुखी हैं या खुश हैं। पहले तो बच्चे कुछ हिचकिचाए, लेकिन जल्द ही वे एक–दूसरे पर यकीन करने लगे और अपनी खुशियों, दुखों तथा कुण्ठाओं को काफी खुलकर साझा करने लगे। यह कहना आवश्यक नहीं कि इन बातों को व्यक्त करने से एक–दूसरे को बेहतर रूप से समझने में मदद मिली। इससे अकसर हमें चीजों को सुधारने या समाधान खोजने में भी मदद मिली। एक शिक्षक के रूप में मुझे बच्चों की भीतरी दुनिया में झाँकने का सौभाग्य मिला और इससे मुझे उन तक और अधिक प्रभावी तरीके से पहुँचने के प्रयास में भी मदद मिली।

कक्षा के वातावरण की बात तो अकसर की जाती है लेकिन मैं कक्षा के बाहर की जगहों के बारे में ध्यान आकर्षित करना चाहती हूँ। ये ऐसे स्थान हैं जो युवा मन को आकार देते हैं इसलिए इन्हें संवेदनशीलता के साथ सम्भालने की सख्त जरूरत है।

आइए, पहले स्कूल की प्रार्थना सभा के बारे में बात करें। स्कूल में प्रार्थना सभा का आयोजन जिस तरीके से होता है वह उस स्कूल की संस्कृति को प्रतिबिम्बित करता है। यह ऐसा समय है जब पूरा स्कूल एक–दूसरे से मिलता है और इसलिए यहाँ विविध कलाओं के माध्यम से विचारों, चर्चाओं तथा अभिव्यक्तियों को साझा किया जाता है, जिनसे युवा मन को सकारात्मक तरीके से आकार देने के प्रचुर अवसर मिलते हैं ताकि वे प्रबुद्ध, प्रेरित व सक्षम बन सकें। लेकिन हम इस पवित्र स्थान को बच्चों की "प्रतियोगिता" और "प्रदर्शन" का स्थान बना देते हैं बजाए इसके कि वहाँ सही मायनों में साझेदारी और विकास किया जाए। क्या यह स्थान केवल यह जाँचने के लिए है कि बच्चे सीधी पंक्ति में खड़े होते हैं या नहीं, हमेशा साफ–सुथरी व उचित वर्दी में आते हैं या नहीं, जहाँ सिर्फ सबसे सक्षम विद्यार्थियों को ही प्रदर्शन करने का मौका मिलता है या फिर ये ऐसे स्थान भी हैं जहाँ हर बच्चे की सर्वश्रेष्ठ बातों को उजागर किया जाए? मेरे जीवन के सर्वाधिक मार्मिक क्षणों में से एक क्षण वह था जब एक विकलांग बच्ची की मंच पर चढ़ने में सहायता की गई। उसे समाचार प्रस्तुत करना था। वह लड़खड़ाते हुए अटपटे तरीके से माइक के सामने आकर खड़ी हुई। उसकी अस्थिर सी भाषण शैली, जो मुश्किल से सुनाई देती थी, उत्कृष्टता से कोसों दूर थी लेकिन अगर यह अनुभव उसके आत्मविश्वास के निर्माण के लिए उसके पूरे जीवन काल का पाठ था तो छोटे दर्शकों के लिए संवेदना का पाठ भी था।

स्कूलों में होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों के बारे में भी यही बात कही जा सकती है। कितनी ही बार शिक्षकों का ध्यान सही प्रदर्शन पर इतना अधिक होता है कि उस पर उनका विक्षिप्त सा नियन्त्रण बच्चों पर मानसिक रूप से भारी दबाव डालता है। ऐसा इसलिए भी होता है क्योंकि इसे शिक्षक की अपनी क्षमता का प्रतिबिम्ब माना जाता है। कितनी ही बार हमने देखा है कि बच्चे अस्वीकरण के कारण आहत हो जाते हैं, दबाव के कारण तनावग्रस्त हो जाते हैं एवं अभिव्यक्ति करने में प्रतिबन्धित हो जाते हैं क्योंकि उन्हें शायद ही कभी इस बात का अवसर मिलता है कि वे अपने हिसाब से सोचें और बोलें या खुद ही चुनाव करें। स्कूल के बाकी स्थानों की तरह यहाँ भी उनसे यह उम्मीद की जाती है कि वे केवल निर्देशों का पालन करें, खुद पहल न करें क्योंकि यह गलत धारणा बन चुकी है कि अगर यह काम बच्चों पर छोड़ दिया जाए तो वे सिर्फ गड़बड़ी करेंगे। मंच पर प्रदर्शन करने से धीरे–धीरे अवरोधन समाप्त होता है तथा संकोच व अटपटापन दूर होता है। लेकिन दुर्भाग्यवश केवल सर्वश्रेष्ठ बच्चों को ही प्रदर्शन करने का अवसर मिलता है और बाकी लोगों को इस भय के कारण दूर रखा जाता है कि कहीं प्रदर्शन खराब न हो जाए। इस तथ्य को मान्यता नहीं दी जाती कि अगर अपेक्षाकृत कम प्रतिभाशाली बच्चे को मौका दिया जाए तो इससे उसका आत्मविश्वास पूर्ण रूप से और चमत्कारिक ढंग से बढ़ सकता है। सक्षम वातावरण के निर्माण के लिए स्कूल बेहद सकारात्मक कदम उठा सकते हैं और ऐसा करने के लिए उन्हें चाहिए कि वे हर विद्यार्थी को प्रदर्शन का मौका दें। भावना यह होनी चाहिए कि भागीदारी महत्त्वपूर्ण है न कि प्रदर्शन ताकि कुछ चुनिन्दा लोगों का नहीं वरन सभी का लाभ हो।

खेलकूद का स्थान एक और ऐसा स्थान है जहाँ अद्भुत अधिगम होता है, न केवल ध्यान केन्द्रित करने, अभ्यास करने, दृढ़ रहने का एवं टीम भावना का बल्कि स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का भी। हालाँकि यहाँ टीम भावना शब्द का प्रयोग विरोधाभास देता हुआ–सा प्रतीत हो सकता है लेकिन इसके पीछे एक उद्देश्य है। खेल के मैदान में बच्चों को प्रतिस्पर्धा की भावना से दूर रखना असम्भव है, जहाँ जुनून अपनी चरम सीमा पर होता है। फिर भी उन तरीकों

का पता लगाना सम्भव है जिनसे बच्चों को यह सिखाया जाए कि उन्हें जीतने के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना चाहिए पर शिष्टता से हारना भी आना चाहिए। उन्हें एक योग्य प्रतिद्वन्द्वी की सराहना करना, खेल के लिए खेल की सराहना करना और योग्य खिलाड़ी की किसी पूर्वाग्रह के बिना प्रशंसा करना; ताली बजाना एवं अपने व दूसरों के लिए जश्न मनाना आना चाहिए और इन सबके साथ उन्हें खिलाड़ी–भाव का विकास करना चाहिए जिसके बिना व्यक्ति जीवन में अधूरा रह जाता है। मुझे एक घटना याद आ रही है जो हमेशा मेरे मन में बसी रहेगी। रिले रेस चल रही थी और हर खिलाड़ी अपने प्रतिद्वन्द्वी को पछाड़ने में लगा हुआ था। रेस अपने अन्तिम दौर में पहुँच चुकी थी, एक लड़की सबसे आगे निकल गई थी और यह स्पष्ट था कि वही जीतेगी। तालियों की गड़गड़ाहट के बीच सबने जरा जिज्ञासा के साथ देखा कि वह लड़की समापन रेखा के कुछ दूर पहले ही रुक गई। उसने बाकी तीन बच्चों का इन्तजार किया और फिर चारों एक–दूसरे का हाथ पकड़कर साथ–साथ समापन रेखा तक दौड़े। यह बात खेल के मैदान में बिलकुल अनसुनी थी लेकिन उस रोज उस किशोरी ने खेल के नियमों को इस तरह से बदलकर रख दिया था जैसा पहले कभी नहीं हुआ था!

क्या आपने कभी किसी बच्चे या माता–पिता को माता–पिता व शिक्षकों की मीटिंग के नाम पर घबराते हुए देखा है? ये मीटिंग "स्पष्ट रूप से प्रतिभाशाली" बच्चों के माता–पिता के लिए प्रोत्साहक हो सकती है, लेकिन उनके लिए यह वाकई एक कटु अनुभव है जो अकादमिक रूप से अच्छे नहीं हैं या जो अपना गृहकार्य नहीं करते या जो अपनी चीजें गुमा देते हैं....शिकायतें कई हैं जिन्हें कई अन्य लोगों के सामने बड़ी असंवेदनशीलता के साथ सुनाया जाता है।

मुझे याद आती है एक बच्ची की जो ऐसी ही एक मीटिंग के बाद बुरी तरह से सिसक रही थी क्योंकि जैसा कि पहले से ही पता था, लगभग हर शिक्षक ने उसकी इतनी ज्यादा शिकायत की थी कि वह तंग आ गई थी। मुझे लगता है कि उस दिन वे उसकी आत्म–छवि को नुकसान पहुँचाने में कामयाब रहे थे। समय आ गया है कि जब हम बच्चों के बीच में मौजूद अन्तर और उनकी गोपनीयता का आदर करें और फीडबैक देने में संवेदनशीलता बरतें। माता–पिता व शिक्षकों की मीटिंग भी ऐसा स्थान है जो सक्षमकारी या असक्षमकारी हो सकता है और यह इस बात पर निर्भर करता है कि इसका संचालन कैसे किया जाता है। यदि पहले बच्चे की सर्वश्रेष्ठ बातों को सही मायनों में बाहर लाने की कोशिश की जाए, बिना इस बात को अनदेखा किए कि कहाँ आलोचना की आवश्यकता है, तो यह दुनिया रहने के लिए एक दयालु स्थान बन जाए! आखिरकार, बच्चे की कमियों को इंगित करके नहीं वरन उसकी ताकतों को उजागर करके उसमें आत्मविश्वास उत्पन्न किया जा सकता है।

श्री अरविन्द के शब्दों में,"मन की शिक्षा की तरह ही हृदय की शिक्षा में भी, सबसे अच्छा तरीका यह है कि बच्चे को अपनी ही पूर्णता के लिए सही मार्ग पर डाला जाए और उसका अनुसरण करने के लिए उसे प्रोत्साहित किया जाए; इसके लिए उस पर नजर रखें, उसे सुझाव दें, सहायता दें लेकिन दखलअन्दाजी न करें।" स्कूल के विभिन्न स्थानों द्वारा जुटाया गया ऐसा वातावरण स्कूल को वाकई हर तरह से सक्षम बना देगा।

श्रीपर्णा तम्हाणे इस लेख के लिखे जाने के समय अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन, बेंगलूरु, के यूनिवर्सिटी रिसोर्स सेण्टर में संसाधक के रूप में शिक्षकों के लिए एक वेबसाइट (www.teachersofindia.org) के लिए डिजिटल एवं नॉन–डिजिटल संसाधनों का निर्माण कार्य करती थीं। वे जे.कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन के स्कूलों में 15 वर्षों तक अँग्रेजी व सामाजिक अध्ययन की शिक्षिका रह चुकी हैं। वे पाठ्यचर्या के विकास एवं शिक्षक संवर्धन मॉड्यूल से भी जुड़ी हैं। वे शिक्षकों की सलाहकार हैं और उनके लिए संवर्धन कार्यशालाओं का सुगमीकरण कर चुकी हैं। आजकल वे कोलकाता में रहकर स्वतंत्र रूप से कार्य कर रही हैं। उनसे sriparna.newleaf@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : नलिनी रावल

